International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''अहिंसा परमोधर्मः''

डा0 शत्रुहन कुमार रौशन

जिस प्रकार मानव मात्र के लिए अनिवार्य धर्म सत्य–भाषण कहा गया है ठीक उसी तरह मानवता की रक्षा के लिए अहिंसा जीव दया भी। अहिंसा के बिना मानव न कहलाकर दानव कहलाने लगा है। हिंसा कभी भी मानव का धर्म नहीं हो सकता। कभी इसी अहिंसा के बल पर बौद्ध धर्म राष्ट्र धर्म का स्थान प्राप्त कर लिया था। आज भी राष्ट्रीय ध्वज में वर्तमान अशोक चक्र, बौद्ध धर्म का ही स्मारक है। हमारे सबसे बड़े धर्मशास्त्री मनु ने 'न च प्राणिवधः स्वर्ग्यः' ''यक्षरक्षः पिशाचन्नं मद्यं मांसं सुराऽसवम्''[1] इत्यादि कहकर अहिंसा को ही परमधर्म घोषित किया है। अहिंसा सत्यभाषण, चोरी से मुक्ति, लेन–देन में पवित्रता ब्रह्मचर्य का पालन तथा आवश्यकता से अधिक धन संचय न करना इन सबों को चारों वर्णों और आश्रमों के लिए अवश्यमेव पालनीय धर्म बतलाया है। जैसे– ''अहिंसा सत्यमस्तेय शौचमिन्द्रित निग्रहः। (अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसंग्रहः)

एतं सामाजिक धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः।।''[2]

इसी प्रकार महान् क्रांतिकारी विद्वान विष्णु शर्मा ने अपनी कृति हितोपदेश में– ''परस्परं विवदमानाामपि धर्मशास्त्राणामहिंसा परमो धर्मः ''इत्यत्रैकमत्यम्''[3] लिखा है। वस्तुतः अहिंसा के प्रचारार्थ ही हमारे ऋषियों ने धर्मग्रंथो की रचना की। अतएव कर्णपर्व महाभारत में वेदव्यास ने भी कहा है– ''अहिंसा भतनां धर्मप्रवचनकंकृतमृ''[4] इत्यादि। इन पूर्वाक्त वचनों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि 'अहिंसा' की उपेक्षा कर धर्म की लाश मात्र ढोना ही है और कुछ नहीं। केवल अहिंसा के पालन से सुपूर्ण मानवधर्म सुरक्षित हो जाते हैं और इसके बिना मानव धर्म को बचाना कठिन ही नहीं असंभव प्रतीत होता है। सत्यभाषण आदि भी तब ही तक कहे जाते हैं, जब तक वे हिंसा से मुक्त हैं, अतएव देवी भागवत में कहा गया है– '' सत्यं न सत्यं खलु यत्र हिंसा''[5] वह सत्य सत्य नहीं कहा जा सकता, जिसमें हिंसा की दुर्गन्ध हो।

इस प्रकार अहिंसा प्राणी मात्र का धर्म बन जाता है। अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है– न मारना। लेकिन जिन अर्थों में अहिंसा हमारे आदर्शग्रंथों में व्यक्त की गयी है और जिन रूपों में ऋषि मुनि इसका व्यवहार में पालन करते आये हैं, वह इस अर्थ से कहीं अधिक व्यापक है। अहिंसा धर्म एक ऐसा बन जाता है जिसके पालन करने से प्राणी मात्र में वैरभाव ही निर्मूल हो जाता है। श्रुति का कथन है– 'मा हिंस्यात् सर्वाणि भूतानि' अर्थात किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो। वेद में कई स्थलों पर अहिंसा के लिए प्रार्थनाएं की गयी है। योग दर्शन में अष्टांगयोग प्रथम अंग यम को परिभाषित करते हुए महर्षि पतंजलि का कथन है– ''अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहा यमाः।[6] अर्थात् यम के पांच प्रकारों में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |

हिंसा प्रथम अंग है। 'मन, वाणी और शरीर से किसी भी प्राणी को कभी किसी प्रकार का कष्ट न देना ही अहिंसा कहलाता है।' वास्तव में परपीडज्ञवृत्ति का निवारण ही अहिंसा है।

पातंजलयोगदर्शन में हिंसा के कई प्रकार बताये गए है। कर्ताभाव से हिंसा के तीन भेद हो जाते हैं– 'कृतकारिताऽनुमादिता'[7] 'कृत' अर्थात् स्वयं करे, 'कारिता' दूसरों रे करवाना तथा 'अनुमोदिता' हिंसा का अनुमोदन करना। वृत्ति के आधार पर तीन और भेद करते हुए कहा गया है– 'लोभक्रोधमोहपूर्वकाः' अर्थात हिंसा, लोभ, क्रोध और मोह के कारण की जाती है। इन भेदों को मिलाकर एक साथ देखने से हिंसा के नौ भेद हो जाते हैं। हिंसा की तीव्रता के आधार पर इसके तीन भेद और हो जाते हैं– 'मृदुमध्यधिमात्राः' अर्थात् किसी को थोड़ा दुख देना, कुछ अधिक दुःख देना और बहुत दुःख देना। इन सबों को एक साथ मिलाने पर हिंसा के सत्ताईस भेद हो जाते हैं। चूंकि हिंसा मन, वाणी और शरीर से की जा सकती है, इसलिए हिंसा के इक्यासी प्रकार बताये गये हैं। देश काल और व्यक्ति के आधार पर हिंसा को और भी कइ्ग भागों में बांटा जा सकता है। योग याज्ञवल्क्य प्रणीत योगसंहिता में कहा गया है–

''कर्मणा मनसा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा।
अक्लेशजननं प्रोक्तं अहिंसात्वेन याकगिभिः।।[8]

अर्थात् कर्म से, मन से, और वाणी के द्वारा किसी को क्लेश न पहुंचाना ही अहिंसा धर्म कहलाता है। साधारणतः क्लेश का अर्थ होता है– किसी को दुःख न देना तथा न ही सताना। लेकिन योग दर्शन में क्लेश एक पारिभाषिक शब्द है– ''अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः।।[9]

अर्थात् अविद्या, अस्मिता, राग–द्वेष और अभिनिवेश– ये पांच क्लेश कहे जाते हैं। इन पांचो में से किसी का भी प्रयोग किसी के भी विरूद्ध किया जाता है तो वह हिंसा कहलाती है। जैसे किसी को मूर्ख बनाना ही 'अविद्या' कहलाती है। किसी के घमण्ड को बढ़ाना ही 'अस्मिता' है। किसी के मन में ऐसा प्रेम उत्पन्न कर देना कि वह रोता फिरे 'राग' है, किसी से शत्रुता रखना ही 'द्वेश' कहलाता है तथा किसी के मन में मरने का भय पैदा करना ही 'अभिनिवेश' कहलाता है। इन सबका या इनमें से किसी एक का भी प्रयोग करना हिंसा है तथा इसका प्रयोग कभी नहीं करना अहिंसा धर्म है। किसी के सुख में, ज्ञान में और जीवनशैली में बाधा पहुंचाना हिंसा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आज के अशांत और हिंसाप्रधान वातावरण में अहिंसाधर्म पालन ही कल्याणकारी, शांतिप्रद तथा निर्भयता प्रदान करने में सक्षम होगा। अहिंसा विपरीत परिस्थितियों में भी मनुष्य को अडिग रखकर साहस प्रदान करता है। इस धर्म के पालन से ही मानवता के प्रति गहरी आस्था रखना असंभव प्रतीत होता है। इस प्रकार अन्यान्य सारे उपाय तराजू के एक पलड़े पर तथा अहिंसा को दूसरे पलड़े पर रखा जाए तब भी अहिंसा का पलड़ा ही सदा भारी रहेगा। अतः अहिंसा के माध्यम से ही मानव समाज का कल्याण संभव प्रतीत होता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |